EDITORIAL

May Day (Labour Day)

May Day is the international Day of workers dedicated to workers and labourers across the world. This day celebrates labourers and encourage them to be aware of their rights. On this day, people across the world observed the day by conducting protest and marches to achieve the rights of workers and save them from exploitation.

Before 19th Century, the workers working conditions were severe and it was quite Common to work 10 hours to 16 hours a day in unsafe conditions in America. Death and injury was common at many work places. Thousands of men, women and Children were dying needlessly every year in the work place. There was bitter attack on workers and they were seen as slaves in the society. These were the facts happened in 1860s. By seeing all these conditions, 8 hours duty concept developed in the minds of all the working class. Consultations were held at many places in America. A National convention was held in 1884 at Chicago, the Federation of organized trades and labour unions proclaimed that "eight hours" per day is legal right of workers. The concept of "eight hours" largely supported by strikes and demonstrations in America. Millions of workers came to streets at "Chicago" and demanded 8 hours duty on 04-05-1886. A rally of workers was moblised calmly with strong determination to abolish slavery system at working place. But the Government very planedly gun downed the workers mercilessly in the "HAY MARKET" at Chicago. On that day, thousands of workers lost their lives to the cause of 8 hours duty. More than 3,00,000 workers in 13000 business establishments came to streets on 1st of May to protest against the vindictive act of Govt. In that situation, the Govt felt Com. Parson, Com. Spices, Com. Engel and Com. Fisher were responsible for the incident happened at "HAY MARKET" in Chicago. So, they were hanged on 11-05-1887. The youngest 22 years old Louis Lingg was suicided in Jail. They all became the Chicago Martyrs of working class. Let us all salute the brave Hero's, who stood for cause of right of workers and for a fair society and sacrificed their lives. We cannot forget their noble sacrifices for 8 hours duty to workers.

Then after, workers, many ideologists and fundamentalists condemned the vindictive action of Government and called all the workers in the world be united to fight out for securing justified demands. They met in Paris in 1889 and decided to celebrate May 1st as international workers day. In all countries May day was observed from 1890. May day is official holiday in 66 countries, unofficially more countries celebrating May Day in the world as per their tradition.

In our country, Com. Singaravelar a great patriot and working class leader of Madras first observed May Day in 1923 by calling public meeting and procession.

NFTE has a rich tradition of observing May Day in almost all Branches/District/Circle head quarters by hoisting our flags. And also our Comrades were participating in rallies and meetings organized by Trade unions in the country.

In DOT period, there were casual Mazdoors, Part time workers and Ayas were doing more than 8 hours duty without paid weekly off and social Securities. Knowing all the facts, our visionary leaders Com. OPG and Com. Chandrashekar have taken lot of pain to regularise them in DOT/ BSNL including Ayas/part time workers in one stroke. It was a memorable achievement of NFTE in Trade union movement.

At present thousands of Contract workers are doing duties similar to regular staff. NFTE conducted many struggles to get EPF deduction and social securities and constantly persuing the matter of regularization and pension. After VRS – 19, Corona Pandemic, there was a change in the situation. Unfortunately, we the victims for Govt. polices, Govt is introducing fixed time employment in all sectors, which increasing unemployment and boost to Private Sectors.

BSNL is facing stiff competition in the market. We are lacking behind, because of the Anti labour and Anti PSU policies of Govt. The Govt have forgotten what they promised us at the time of formation of BSNL in respect of Financial viability. Delay in providing 4G spectrum is badly effecting our revenue and customer satisfaction. Now, the Govt nicely cutting the rights of workers one by one. The Govt is directly/ indirectly supporting and strengthening private Corporates to close down the PUS's in the country. So, we have to remember "HAY MARKET" sacrifices and took the inspiration of May Day (Labour Day) to safe guard the workers rights and our beloved entity. Let, we took a pledge on May Day that we determined to save BSNL and all employees at any Cost. And let us rededicate ourselves for the welfare of all workers in the BSNL.

"May Day Zindabad"–"Workers Unity Zindabad"

Long Live BSNL – NFTE ZINDABAD

संपादकीय

मई दिवस मजदूर दिवस

मई दिवस अर्न्तराष्ट्रीय मजदूर दिवस है, जो दुनिया के कामगारों एवं मेहनतकश मजदूरों को समर्पित है। यह दिन मजदूर समुदाय को उत्साहित करता है तथा उन्हें यह अवसर प्रदान करता है कि वे अपने हकों और अधिकारों के विषय में जानकारी रख सकें। दुनिया भर में एक मई को आमजन विशेषतः श्रमिक समुदाय रैली एवं विरोध मार्च निकालकर छोटे एवं बड़े शहरों में इस विशेष दिन को गर्मजोशी के साथ मनाते हैं। मई दिवस मजदूरों कामगारों को शोषण से बचाने एवं उनको शोषण के खिलाफ लड़ने का शंखनाद है।

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्व श्रमिकों की कार्य पद्धति अति दर्दनाक थी। उन्हें 10 से 16 घंटे तक कार्य करने की बाध्यता दी। कार्यस्थल पर पेयजल, उचित प्रकाश की व्यवस्था नहीं रहती थी। नाबालिग बच्चों सहित बुजुर्ग सभी मजदूरी पर लगाये जाते थे और प्रतिवर्ष हजारों श्रमिकों की दर्दनाक मौत कार्यस्थल पर ही हो जाती थी। शोषण और उत्पीड़न का यह आलम था कि श्रमिक एवं मजदूर–कामगार नहीं होकर गुलाम समझे जाते थे और उन्हें गुलाम की तरह ही रखा जाता था। यह उस काल में मजदूरों की वास्तविक परिस्थिति थी। 1860 के दशक में मजदूर विषम गुलामों की तरह रहते थे।

इन परिस्थितियों से गुजरते हुए कुछ समाजवादी विचारकों के मन में आठ घंटे कार्यावधि की सवाल दिमाग में कौंधने लगी, जो शनैः शनैः जोर पकड़ते गया और संपूर्ण विश्व में आठ घंटे कार्यावधि की मांग जोर पकड़ने लगी। सर्वप्रथम अमेरिका में सम्पर्क स्थापित शुरु हुए और 1884 में अमेरिका के शिकागो शहर में एक नेशनल कन्वेंशन आयोजित हुई जहां आठ घंटे कार्यावधि की मांग बुलन्दी के साथ उठाई गई। उक्त कन्वेंशन में संगठित मजदूर संघों ने आठ घंटे कार्यवधि को न्यायसंगत बताया और मांग दर्ज की गई। मजदूर संगठनों ने आठ घंटे की कार्यावधि श्रमिकों का कानूनी अधिकार बताया। विद्रोह की चिंगारी प्रस्फुटित हो चुकी थी और निर्धारित कार्यक्रम के आलोक में 04.05.1886 को शिकागो शहर की सड़कों पर लाखों मजदूर उतर आये। एक प्रचंड रैली पूर्ण शान्ति के माहौल में निकाली गयी और आठ घंटे कार्यवधि के लिए गगनभेदी नारों के साथ मांग उठाई गई। शिकागो के हे–मार्केट से रैली को गुजरते वक्त बड़े ही योजनाबद्ध तरीके से सरकार एवं धन्नासेठों के गठजोड़ के तहत मजदूरों पर गोलियों की बरसात कर दी गई। इस आक्रमण में हजारों श्रमिकों को मौत के घाट उतार दिया गया। आन्दोलन में तेरह हजार उत्पादक संस्थानों के तीन लाख मजदूर सड़कों पर उतर आये थे। अमेरिकी सरकार इस घटना से हिल गई और एक घटिया जांच की प्रक्रिया के द्वारा का. पारसन, का. स्पाइसेज, का.एन्जेल एवं का. फिशर को उक्त हे–मार्केट की घटना के लिए दोषी ठहराते हुए उन्हें 11.5.1887 को फांसी पर लटका कर हत्या कर दी गई। एक नौजवान साथी सिर्फ 22 वर्ष का का. लुईसलिंग ने जेल के अन्दर असहनीय अत्याचार के कारण फांसी लगा ली। ये सभी साथी शिकागो के शहीद घोषित किये गये और आज भी सम्पूर्ण विश्व में इन शहीदों को प्रतिवर्ष मई दिवस के दिन याद करते हैं तथा उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोषण एवं उत्पीड़न के खिलाफ लड़ने का संकल्प लेते हैं। इन शहीदों के शहदत ने दुनिया भर में आठ घंटे कार्यावधि का प्रतिपादन किया अतः इन्हें श्रमिक समुदाय सदा–सर्वदा याद रखेंगे।

इस जघन्य अविस्मरणीय घटना के बाद अर्न्तराष्ट्रीय पटल पर विचारकों ने उक्त घटना की भर्त्सना की तथा सन् 1889 में पेरिस में आयोजित एक सम्मेलन में यह घोषणा पारित किया गया कि शिकागो के शहीदों की याद में तथा श्रमिकों को शोषण मुक्त वातावरण में समुचित कार्य स्थल पर आठ घंटे कार्यावधि के अधिकार को अक्षुण्ण रखने तथा शोषण के खिलाफ सजग रहने के संदेश के साथ प्रतिवर्ष 1 मई को मजदूर दिवस मनाया जायेगा। 1890 से लगभग सभी देशों में 1 मई को अर्न्तराष्ट्रीय

मजदूर दिवस के रुप में मनाया जाना लगा। दुनिया के करीब 66 देशों ने मई दिवस को सरकारी छुट्टी घोषित कर दी गई है।

हमारे देश में का. शिंगारावेलर एक मजदूर नेता एवं प्रखर समाजसेवी ने सन् 1923 में मद्रास शहर (तमिलनाडू) में एक विशाल जनसभा आयोजित कर एवं जुलुस के द्वारा मई दिवस मनाने की प्रक्रिया शुरु की।

आज सम्पूर्ण राष्ट्र के श्रमिक अपने कार्यस्थलों पर मई दिवस प्रतिवर्ष आयोजित करते हुए शिकागो के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा श्रमिकों के अधिकारो से उन्हें अवगत करते हुए शोषण मुक्त वातावरण में कार्य करने एवं उनके अधिकारों के प्रति उन्हें जागरुक करते हैं।

हमारे अपने संगठन एन.एफ.पी.टी.ई/एन.एफ.टी.ई ने इनके स्थापना काल से ही मई दिवस मनाने की प्रथा चली आ रही है। हमारे राष्ट्रीय पैमाने पर सभी शाखाओं पर एक मई को यूनियन के झंडोत्तोलन करते हुए मई दिवस के मूल संदेश को कर्मचारियों के बीच उद्घोषित करते हैं।

डाक एवं दूरसंचार विभाग के विभाजन के उपरान्त, दूरसंचार विभाग में करीब एक लाख के तादाद में कैजुअल मजदूर, पार्ट–टाइम मजदूर एवं आया विभाग में कार्यरत थे। इनकी परिस्थिति भी कार्यावधि के लिए निर्धारित नहीं होते थे। इन्हें भी 10 घंटे 12 घंटे कार्य करना होता था। दैनिक भुगतान की व्यवस्था थी, जिसकी दर अति अल्प होती थी। इनका जीवनयापन भी कठिनाइयों से गुजर रहा था। हमारे सर्वमान्य नेता का. ओ.पी गुप्ता जी ने इन स्थिति को देखकर इनके लिए अनवरत संघर्ष करते हुए इन्हें नियमित कराया तथा वेतनमान एवं सभी सुविधाएं मुहैया कराईं, जिसमें से लाखों कामगारों के परिवार भी आमलोगों की तरह जीवनयापन करने योग्य बन गये। यह ऐतिहासिक सफलता का.ओ.पी. गुप्ता जी के कार्यकाल की स्वर्णिम घटना है।

आज भी बी.एस.एन.एल के अर्न्तगत हजारों मजदूर ठेकेदारों के मार्फत कार्यरत हैं। इन मजदूरों को न्यूनतम वेतन नहीं दिया जाता है। सरकारी व्यवस्था एवं ठेकेदारों के गठजोड़ के तहत इनका अप्रत्याशित शोषण हो रहा है। इनके कार्य के घंटे भी तय नही है। आज सरकार मजदूरों के बलिदान द्वारा अर्जित अनेक सुविधाओं का हरण कर रही है। श्रम कानूनों को निरस्त किया जा रहा है। ठेकेदारी प्रथा एवं निजीकरण को बढ़ावा देते हुए फिर से श्रमिकों को धन्नासेठों का गुलाम बनाने की प्रक्रिया जारी है।

ठेकेदारों के माध्यम से कार्यरत मजदूरों का शोषण, उत्पीड़न हो रहा है। इनके लिए कोई सामाजिक सुरक्षा एवं भविष्य की व्यवस्था नहीं है। कुल मिलाकर ऐसा प्रतीत हो रहा है कि फिर से शिकागो का त्याग, बलिदान एवं संघर्ष द्वारा अर्जित उपलब्धियों का पटाक्षेप करते हुए श्रमिकों को उन्नीसवीं सदी के दास–काल में धकेलने की सुनियोजित प्रक्रिया जारी है। बी.एस.एन.एल में वी.आर.एस 19 के उपरान्त कोविड–19 के दहशत के बीच सरकारी चिंतन के तहत बी.एस.एन.एल प्रबन्धन ने मनमाने ढ़ंग से और एकतरफा कैडर रिस्ट्रक्चरिंग के नाम पर समस्त कार्यरत कर्मचारियों को अधिक घोषित कर दिया गया है। पदों का अनुमोदन कार्यरत कर्मचारियों की संख्या से काफी कम कर दी गई है। कर्मचारियों के पदोन्नति के रास्ते बन्द कर दिये गये है। सरकारी दवाब के अर्न्तगत संचालित कम्पनी में मुनाफा नहीं होने के नाम पर कमचारियों को वेतन पुनरीक्षण नहीं किया जा रहा है। कुल मिलाकर स्थिति चिंतनीय है। सरकार अपने नीतिगत तरीके से लोक उपक्रमों को निजी हाथों में सौंपने जा रही है।

बी.एस.एन.एल के स्थापना के समय सरकार के जो लिखित वादे किये थे उससे मुकर रही है।

स्वदेशी के नाम पर बी.एस.एन.एल को 4–जी स्पेक्ट्रस की सेवा देने को पिछले चार वर्षों से रोक कर रखी है। बी.एस. एन.एल वांछित संसाधनों के अभाव में पिछड़ते जा रही है। राजस्व की कमी हो रही है।

अतएव आज भी हे–मार्केट शिकागो का संघर्ष नेताओं का त्याग और बलिदान फिर से हमें ललकार रही है। आज भी मई दिवस का सन्देश प्रसांगिक है। एकताबद्ध होकर ही हम इन श्रमिक विरोधी नीतियों को परास्त कर सकते हैं। आइये हम इस मई दिवस पर शहीदों की शहदत से प्रेरणा लेते हुए लोक उपक्रमों की सुरक्षा एवं कार्यरत कर्मचारियों की हित रक्षा का संकल्प लें।

मई दिवस जिन्दाबाद – कर्मचारी एकता जिन्दाबाद

बी.एस.एन.एल जिंदाबाद

एन.एफ.टी.ई जिन्दाबाद